विचार बिन्दु

पूरे यत्न से इतिहास की रक्षा करनी चाहिए, इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने से विनाश निश्चित है। –महाभारत

अवैध खनन पर ऑडिट रिपोर्ट क्या शासन को जगा पाएगी?

खनिज मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन हैं मगर वह ऐसी संपदा है जो सीमित है और जिसे फिर से नहीं बनाया जा सकता। इसलिए उसका खनन बड़ी सावधानी से किया जाना अपेक्षित होता है। यही कारण है कि खनन गतिविधियों पर राज्य नियंत्रण के कड़े कानून होते हैं। मगर जब राजका तंत्र भ्रष्टाचार में डूब जाए तब खनन माफियाओं की बन आती है। राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं जिनमें से 57 का व्यावसायिक दोहन अभी किया जा रहा है। बहुतों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि देश में सर्वाधिक खनन पट्टे राजस्थान में हैं। इसके बावजूद माइनिंग से राजकोष को पूरा राजस्व नहीं मिलता है क्योंकि उसका बड़ा हिस्सा कार्यपालिका की लापरवाही व भ्रष्टाचार से छीजत में चला जाता है। खनिज विभाग के नवीनतम वार्षिक प्रशासनिक प्रतिवेदन के अनुसार विभाग पिछले वर्षों में राजस्व के वार्षिक लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं कर पाया है। राजस्व के लक्ष्य और प्राप्ति के बीच अंतर साल-दर साल बढ़ता ही गया है। इसका एक बड़ा कारण चहुं ओर फैला भ्रष्टाचार है जिसके चलते अवैध खनन को रोकने और रॉयल्टी की चोरी पर प्रभावी नियंत्रण करने में राज्य पूरी तरह असफल नज़र आता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2017-18 में 4,900 करोड़ रुपयों के वार्षिक लक्ष्य के मुकाबले 4,521.52 करोड़ रुपये की ही आय हुई, जबकि 2016-19 में छह हजार करोड़ रुपये के मुकाबले 5,301.48 करोड़ रुपये ही मिले। इसके अगले साल 6,600 करोड़ रुपयों की आय के लक्ष्य के मुकाबले 4,579.09 करोड़ रुपये, 2020-21 में सात हजार करोड़ रुपयों के मुकाबले 4,965.47 रुपये और 2021-22 में दिसंबर 2021 के अंत तक 7,100 करोड़ के मुकाबले 4,159.12 करोड़ रुपये ही मिल पाए थे। यह हाल तब है जब अवैध खनन को रोकने के लिए खनिज विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के अलावा संबंधित जिला कलेक्टर, एसडीएम तथा तहसीलदार के अलावा उप वन संरक्षक के अधीन क्षेत्रीय वन अधिकारी एवं एसडीआरआई के रेवेन्यू इंटेलिजेंस ऑफिसर को भी अधिकार दिए हुए हैं। भारत सरकार के आईबीएम विभाग के माइनिंग सर्विलियांस सिस्टम (एमएसएस) के जरिए सैटेलाइट इमेजरी तकनीक से प्रधान एवं अप्रधान खनन पट्टों के 500 मीटर की परिधि में अवैध खनन के ट्रिगर पॉइंट भी राज्य के खनिज विभाग को भेजे जाते हैं। मगर कार्यवाही नहीं होती। खनिजों के बड़े पैमाने पर अवैध खनन की खबरें समाचार माध्यमों में तो अक्सर आती रहती हैं, लेकिन खुद खान विभाग ने भी वर्ष 2015-16 से 2019-20 के दौरान अवैध खनन के 48,486 मामलों की पहचान की। यह आंकड़ा इस दौरान अवैध खनन के मामलों में 169 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। भारत के नियंत्रक एवं लेखा परीक्षक (सीएजी) ने इसका आकलन करने के लिए एक विशेष ऑडिट किया। ऑडिट का दायरा अवैध खनन गतिविधियों का पता लगाने और विभाग द्वारा शुरू की गई उपचारात्मक कार्रवाई के लिए तंत्र की जांच करना था। सीएजी ने अवैध खनन के मामलों की जांच के लिए विभाग के पास संसाधनों की उपलब्धता के सवाल का समाधान करने का भी प्रयास किया। इस विशेष ऑडिट में 'गूगल अर्थ प्रो' के माध्यम से रीमोट सेंसिंग डेटा और जीआईएस तकनीक का उपयोग भी किया गया। खदानों और अवैध खनन स्थलों के संयुक्त भौतिक सत्यापन के साथ-साथ राज्य भर में 12 खनन कार्यालयों के रिकॉर्ड की जांच की गई। ऑडिट ने इन चयनित कार्यालयों में खनन पट्टे के क्षेत्र से बाहर अवैध खनन के क्षेत्र का पता लगाने के लिए रिकॉर्ड और उपग्रह चित्रों के माध्यम से एक स्वतंत्र अध्ययन किया।

सीएजी की रिपोर्ट बताती है कि विभाग ने अवैध खनन गतिविधियों की पहचान करने और उन पर अंकुश लगाने के लिए सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध निःशुल्क तकनीकों का लाभ नहीं उठाया। ऑडिट में खनिज पट्टों की ओवरलैपिंग और पट्टों के बीच अंतराल वाले क्षेत्रों के आवंटन या नीलामी न होने जैसी अनियमितताएं सामने आईं। स्पष्ट तौर पर संबंधित अधिकारियों द्वारा खानों के अपर्याप्त निरीक्षण का परिणाम है कि इन अनियमितताओं की पहचान नहीं हो सकी। रिमोट सेंसिंग डेटा और जीआईएस तकनीक के उपयोग से सीएजी ने 122 मामलों (परीक्षण जांच किए गए पट्टों का 34 प्रतिशत) में अवैध खनन गतिविधियों की पहचान की, कुल 49 डिवीजनों में से पांच चयनित डिवीजनों के तहत पांच चयनित तहसीलों में स्वीकृत खनन पट्टों की पहचान की और अवैध खनन का 83.25 हेक्टेयर क्षेत्र चिन्हित किया। इसने 13 खनन पट्टों ऐसे भी पाए जहां खनिज का उत्खनन ही नहीं किया गया था, मगर 22,854 ई-रवन्ना (खनन विभाग द्वारा खनन पट्टा क्षेत्र से खनिज प्रेषण के लिए इलेक्ट्रॉनिक चालान) का दुरुपयोग करके 5.20 लाख मीट्रिक टन खनिज का प्रेषण दिखा दिया गया था। विभाग ने खनन गतिविधियों की प्रभावी निगरानी के लिए 10 अक्टूबर, 2017 से एक वेब-आधारित एप्लिकेशन डीएमजीओएमएस पर काम चालू किया मगर वह इस प्रणाली का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में विफल रहा। जैसे 53 मामलों में अवैध खनन गतिविधियों से संबंधित मांगें (71.20 करोड़ रुपये) डीएमजीओएमएस में बनाए गए मांग रजिस्टर पर नहीं दिखाई गईं। खनन पट्टों से पर्यावरण मंजूरी प्रमाण पत्र या संचालन की सहमति में निर्धारित सीमा से अधिक खनिजों का प्रेषण पाया गया, लेकिन अनुमेय मात्रा से अधिक खनिज के प्रेषण को रोकने के लिए सिस्टम में कोई जांच नहीं की गई। विभाग ने 38 खनन पट्टों में उत्खनन किये गये खनिजों की अधिक या अनाधिकृत मात्रा पर अपेक्षित 13,99 करोड़ रूपये का जुर्माना भी नहीं लगाया। राजस्थान में रॉयल्टी की दरें कुछ विशिष्ट खनिजों को छोड़ कर खनिज के वजन पर आधारित होती है। जिन तुलाओं पर उनको तोला जाता है उनमें से कुछ चुनी हुई तुलाओं के संचालन की सीएजी ने समीक्षा की तो उनमें से 81.68 प्रतिशत मालों में घपले पाए गए जिन्हें शासकीय भाषा में गंभीर अनियमितताऐं कहते हैं। घपले भी ऐसे जिनसे लगता है किसी को कानून की कोई परवाह ही न हो। जैसे 33.28 प्रतिशत ई रवन्नों की पुष्टि के लिए एक ही वाहन के फोटो का अनेक बार उपयोग किया गया। अर्थात जिन वाहनों के लिए ई रवन्ना जारी किए गए वे या तो तुला तक पहुंचे ही नहीं या बिना वजन करवाए ही चलते बने। इससे साबित होता है कि वाहन के वास्तविक वजन के बिना ई रवन्ना की पुष्टि की गई। विभाग इन तुलाओं के संचालन की निगरानी करने में विफल रहा जिसका सीधा असर सरकार के राजस्व पर पड़ा। विभाग के पास मुद्रित क्रमांकित पंचनामों का उपयोग करने की कोई व्यवस्था नहीं पाई गई। विभाग के लोग हाथ से क्रमांक लिख कर पंचनामे तैयार करते हैं। जिन थोड़ी सी जगहों की सीएजी ने जांच की वहां भी 511 पंचनामों को डीएमजीओएमएस पर अपलोड नहीं किया गया पाया गया। उच्च अधिकारियों ने खुद आगे बढ़ कर निगाह रखने की कोई ज़हमत नहीं उठाई। इसके अलावा 28 मामलों में 14.20 करोड़ रुपये के संबंध में अवैध खनन के स्रोतों या स्थलों की जांच ही नहीं की गई। रिपोर्ट से पता चलता है कि विभाग के कर्मी रॉयल्टी तय करने में भी घोर लापरवाही बरतते हैं। जांच में 28 प्रकरणों में रॉयल्टी, खनिज की कीमत तथा कंपाउंड शुल्क की 14.20 करोड़ की राशि का गलत निर्धारण होना पाया गया। खनन पट्टेदार अपने उत्खनित तथा बाहर भेजे गए खनिज की सूचना देने वाली जो वार्षिक और मासिक रिटर्न भरते हैं उनकी निगरानी करने में भी विभाग उदासीन पाया गया। आश्चर्य की बात है कि डीलरों के स्टॉक से रॉयल्टी भुगतान के लिए खनिज कितना बाहर जा रहा है उसकी जांच के लिए कोई विवरणी ही निर्धारित नहीं है। इसके अलावा खदान अनुज्ञप्त धारकों द्वारा किए गए खनिजों की निर्गमन की जांच का कोई तंत्र इस विभाग के पास नहीं है।

हम जानते हैं कि समूची अरावली पर्वतमाला साफ हो जाती यदि देश की सर्वोच्च अदालत कड़ाई से सरकारों को होश में नहीं लाती और उन्हें गैरकानूनी खनन को रोकने के लिए मजबूर न करती। यह ऑडिट रिपोर्ट अब सार्वजनिक है जो आंखें खोल देने वाली है। मगर क्या इससे शासन में बैठे लोगों की आंखें खुलेगी, यह सौ टके का सवाल है।

अवैध खनन गतिविधियों पर अंकुश लगाने तथा ऐसी चोरी से होने वाले सरकारी राजस्व के नुकसान को रोकने के लिए विभाग में एक सतर्कता शाखा भी काम करती है। इस शाखा के कार्यालयों ने चार सालों में 956 प्रकरणों की पहचान की, जबकि समान क्षेत्राधिकार वाले खंड कार्यालयों ने अपने नियमित कामों के अलावा अवैध खनन गतिविधियों के 2,434 प्रकरणों की पहचान की। इससे सतर्कता शाखा के हाल का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। सीएजी की ऑडिट रिपोर्ट की टिप्पणी है कि अवैध खनन गतिविधियों का पता लगाने के लिए इस विशेष शाखा की स्थापना का उद्देश्य एक हद तक विफल रहा है। अवैध खनन की गतिविधियों का पता लगाने के लिए अब आधुनिक प्रौद्योगिकी हमारे हाथ में होते हुए भी सरकार मूक दर्शक बनी रहे इससे दर्दनाक बात और क्या हो सकती है। खनन माफिया को जड़ से खत्म कर देने और माफिया तथा सरकारी कारिंदों के बीच काले पैसों का खेल रोक पाने में सरकारें बेबस नज़र आती हैं शायद इसलिए कि राजनीति के खिलाड़ी जो जनसेवा का चेहरा लिए घूमते हैं वे इसके पोषक हैं। वरना खंड कार्यालयों एवं सतर्कता कार्यालयों के अधिकारियों को सौंपे गए कर्तव्यों की नियमित समीक्षा खनिज विभाग का मंत्री क्यों नहीं करता। जनता का प्रतिनिधि होने के नाते विभाग के मंत्री का यह फर्ज बनता है कि वह अपने विभाग में जनता का हित देखे न कि आंखें मूंदी रख कर खनन माफिया और काम-चोर अफसरों और कर्मचारियों को खेल करने दे। हम जानते हैं कि समूची अरावली पर्वतमाला साफ हो जाती यदि देश की सर्वोच्च अदालत कड़ाई से सरकारों को होश में नहीं लाती और उन्हें गैरकानूनी खनन को रोकने के लिए मजबूर न करती। यह ऑडिट रिपोर्ट अब सार्वजनिक है जो आंखें खोल देने वाली है। मगर क्या इससे शासन में बैठे लोगों की आंखें खुलेगी, यह सौ टके का सवाल है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कविता विकल्प की विधा : वाजपेयी

उदयपुर। नन्द चतुर्वेदी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर नन्द चतुर्वेदी फाउंडेशन की ओर से आंठवा नन्द चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया, कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों क पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया, अतिथियों के स्वागत हेतु अनुराग चतुर्वेदी ने स्वागत उद्बोधन दिया, साथ ही अतिथियों का परिचय देते हुए अशोक वाजपेयी की दो प्रसिद्ध कविताओं से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया आपने कहा कि अशोक जी निर्भीक कवि है जिनकी निष्पक्षता उल्लेखनीय है आपने कहा कि नन्द जी को भी ओम थानवी पसंद थे, ओम थानवी जी को वे अपनी पहली कविता भेजते थे, पत्रकारिता मे आपका विशेष योग रहता है। आपने कहा कि माधव हाड़ा चमकते सितारे हैं वे प्रख्यात आलोचक है। पल्लव हिन्दू कॉलेज मे प्रोफ्रेसर है और ये इनका जादुई चमत्कार है कि दिल्ली जाकर आपने अपना स्थान बनाया है।

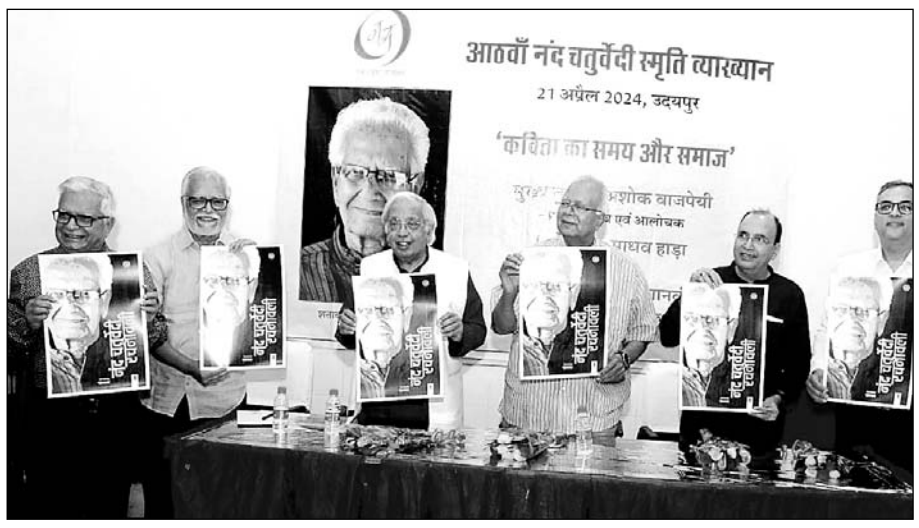

कार्यक्रम में रचानवली के आवरण का विमोचन किया गया। रचनावली के संपादक आलोचक पल्लव ने नन्द बाबू की कविता के अंश सुनाते हुए कहा कि नन्द बाबू ने हमारे लिए समृद्ध विरासत छोडी है। उन्होंने कहा कि नन्द बाबू में पिछली पीढ़ी को याद करने और आदर देने का गहरा जज़्बा था, जिन्हें सब भूल जाते हैं नन्द बाबू उन्हें कविता में स्थान देते हैं चार खंडो की रचनावली का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि पहले खंड में कविता, दूसरे खंड में वैचारिक गद्य, तीसरे खंड मे नन्द बाबू के संस्मरण एवं चौथे खंड मे अनुवाद होंगे।

मुख्य वक्ता अशोक वाजपेयी ने कविता का समय और समाज विषय पर स्मृति व्याख्यान दिया आपने कहा कि नन्द बाबू सादगी वाले और पारदर्शी व्यक्तित्व वाले थे, उनकी सादगी मे सुंदरता और संघर्ष दोनों है उनकी कविता मे उत्सव भी है और कौतुभ भी, नन्द बाबू ने उत्सव की तरह मुक्तिदाई पद का प्रयोग भी किया है, अम्लान रोशनी उनकी कविता में है। नन्द जी के संस्मरणों में भी सौम्यता व सुंदरता ढूंढ लेते थे। नन्द बाबू प्रियदर्शी, स्वप्नदर्शी व समयदर्शी थे। उन्होंने कठिन से कठिन समय में सपने देखने की ताव रखी कवि होने का प्रतिमान है कि उसमें जीजीविषा भी हों नन्द बाबू में ये है, उनकी सामाजिकता भी सौम्य थी, यह उनकी कविताओं में स्वयं नन्द बाबू ने कहा है। आपने कहा कि नंद बाबू कि रचना के शीर्षक ही पढ़ ले तो पाठक जान जायेगा कि वे क्या थे। आज के समय के विषय में आपने कहा कि राजनीति की सर्वग्रासिता से धर्मों का अध:पतन, विद्रुपन हो रहा है। मंदिर व्यापारिक गतिविधि बन गए है, आज झूठ, नफरत, हिंसा, हत्या, लवजीहाद का बुलडोजीकरण हो रहा है। सच आज अल्पसंख्यक है आज का समय स्मृति के क्षरण का समय है। निडर होने के लिए कितना डरना पड़ता है ये नन्द बाबू ने अपनी कविता में कहा है-आज ज्ञान का दैनिक अपमान व अज्ञान का महिमामंडन होता है। आज मीडिया सत्ता से प्रश्न नहीं पूछता, विपक्ष से प्रश्न पूछता है। समाज के विषय में वाजपेयी जी ने कहा कि आज का सबसे हिंसक समाज हिन्दी का समाज है। इस समाज की सहज मानवीयता क्षिरत हो रही है। हिन्दी समाज बेरोजगारी, बेकारी अशिक्षा में आगे हैं, इसमें भी मध्यवर्ग मातृभाषा से दूर होता जा रहा है।

वाजपेयी ने कहा कि हिन्दी समाज का एक प्रतिशत ही साहित्य पढ़ता होगा। हिन्दी समाज पुस्तकों, लेखकों से मुँह फेरे हुए है। हिन्दी समाज सांस्कृतिक विपन्न हो गया है। हिन्दी केवल अभिव्यक्ति और सृजन की भाषा रह गयी है। साहित्य सम्बन्धी संस्थाओ को भी नष्ट कर दिया गया है, पुस्तकालय सुने है, मंदिरों में भीड़ है। हिन्दी लिखने और बोलने वाले लोग भी पुरातत्विक हो गए है। ऐसे समाज में नन्द बाबू का होना अद्भुत है, ऐसे समाज में रहकर भी कविता के समय और समाज पर कहना अदभुत है। हिन्दी में कविता लिखना आज फिजूल मना जाता है, कविता में रुचि का तेजी से ह्रास हो रहा है हिन्दी में कायदे से कविता लिखना गैरकानूनी है। कविता भाषा में लिखी जाती है जो हमारा सामाजिक उत्तराधिकार है। कविता हर समय में संभव है, कविता भाषा का रूपयान भी करती है और संभावना भी व्यक्त करती है, कविता याद को बचाने का काम करती है। उदयपुर के समाज की नन्द बाबू की कविता के प्रति क्या जिम्मेदारी है इस प्रश्न पर कहा कि सब जिम्मेदारी कवि की ही नहीं होती पाठक की भी होती है। कविता जो हो रहा है वह भी और जो नहीं हो रहा उसे भी कहती है, कविता चतुर चालाक जानवर है सब पर नज़र रखती है, कविता बहुलता की पोषक है कविता विकल्प की विधा है, विकल्प की कल्पना की जा सकती है। सपना ना देखना कविता का अपमान होगा। हिन्दी कविता समाज दर्पण नहीं समाज का नैतिक व राजनैतिक पक्ष है। प्रसिद्ध आलोचक प्रो. माधव हाड़ा ने अपने उद्बोधन मे कहा कि कविता का समय से सम्बन्ध महत्वपूर्ण है। नन्द बाबू कि कविता मे समय पारदर्शी है, आपने नन्द बाबू की कविता का पाठ करते हुए कहा कि नन्द बाबू की कविता जीवन के राग की कविता है, जीवन का अभाव उनकी कविता मे है जीवन का राग पक्ष उनकी कविता मे है, नन्द बाबू की सबसे महत्वपूर्ण कविता है-शरीर डॉ. हाड़ा का कहना है कि मुझमें जो थोड़ा बहुत आत्मविश्वास है वह नन्द बाबू कि देन है।

अध्यक्षता कर रहे ओम थानवी ने कहा कि मुझ पर नन्द बाबू का स्नेह काफ़ी था। नन्द बाबू मुझे चिट्ठियां लिखते थे जिन्हे मैंने संभाल रखा है, उनमे से कुछ चिट्ठियों का वाचन कर कहा कि वे समय के यथार्थ की बाते कहते थे। वे पत्रकारिता पर भी कुछ ना कुछ लिखा करते थे, जो उन्हें सही नहीं लगता उसको भी वे कहा देते थे। वे हमेशा बताते थे कि कहाँ आप भावुक हो रहे है, आपकी जो जिम्मेदारी है उसमे ज्यादा भावुकता का स्थान नहीं। उन्होंने कहा कि लेखक आज चुप है जिन्हे कहना चाहिए वे आज चुप है, डरे हुए है ऐसे समय मे नन्द बाबू को पढ़ने की आवश्यकता है, ख़ासतौर पर तब जब हम संकट के समय से गुजर रहे हो।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने किया साथ ही कार्यक्रम मे उपस्थित सभी श्रोताओ और वक्ताओ का अपनी और फाउंडेशन की और से धन्यवाद ज्ञापित किया।

-सुयश चतुर्वेदी,
नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन,
उदयपुर

आजादी के 78 साल बाद भी मूलभूत सुविधायें नहीं पहुंचने से मतदाताओं में नाराजगी

- **खाजूवाला विधानसभा क्षेत्र के राउमावि. फलांवाली के बूथ पर 675 वोटों में से महज पांच वोट ही पोल हुए**
- **बराला गांव के बूथ पर 91.12 फीसदी वोट पड़े, ज्यादा मतदान की वजह गांव का शत-प्रतिशत शिक्षित होना प्रमुख रहा**

बीकानेर, (निसं)। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में कम मतदान को लेकर दिल्ली में मुख्य चुनाव आयुक्त से लेकर जिलों के निर्वाचन अधिकारी तक जिस सवाल का जवाब तलाश रहे हैं, उसका जवाब बीकानेर लोकसभा क्षेत्र के खाजूवाला विधानसभा क्षेत्र में मिल सकता है। इस विधानसभा क्षेत्र के दो अलग-अलग गांवों में बीकानेर लोकसभा सीट का न्यूनतम और सर्वाधिक मतदान दर्ज हुआ है। न्यूनतम मतदान वाले फलांवाली गांव के बूथ पर जहां एक फीसदी से भी कम यानी 0.74 प्रतिशत मत पड़े, तो वहीं इसी वि.स. क्षेत्र के बराला गांव के बूथ पर 91.12 फीसदी वोट पड़ गए। जहां तक कम मतदान की बात है, तो आजादी के 78 साल बाद भी यहां सड़क, बिजली-पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का न होना मुख्य कारण माना जा रहा है, जो इस बार विस्फोटक रूप से सामने आ गया।

वहीं ज्यादा मतदान की वजह गांव का शत-प्रतिशत शिक्षित होना प्रमुख रहा। लोग सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के प्रति जागरूक रहे। शासन-प्रशासन के तालमेल से इलाके का विकास हुआ। मूलभूत सुविधाओं पर काम हुआ। नतीजा यह हुआ कि यहां लोकतंत्र में लोगों की आस्था बढ़ी। पहले विधानसभा चुनाव में सर्वाधिक मतदान की होड़ रही। अब लोकसभा चुनाव में भी यही नजारा दिखा। खाजूवाला विधानसभा क्षेत्र के राउमावि. फलांवाली के बूथ पर 675 वोटों में से महज पांच वोट ही पोल हुए, जबकि राउमावि बराला के बूथ पर 473 में से 431 वोट पोल हुए। कम मतदान में दूसरे नम्बर पर लूणकरनसर के धीरेरां स्टेशन का बूथ रहा। यहां पर 714 में से 34 वोट ही पड़े। मतदान का प्रतिशत 4.76 रहा।

भाजपा प्रत्याशी अर्जुनराम मेघवाल के मतदान केन्द्र बीकानेर पूर्व विधानसभा के राउमावि किशमीदेसर में 76.60 फीसदी मतदान हुआ। जबकि कांग्रेस प्रत्याशी गोविन्दराम मेघवाल के मतदान केन्द्र खाजूवाला विधानसभा के राउमावि पूगल में 64.69 प्रतिशत मतदान हुआ है। खाजूवाला क्षेत्र के गांव फलांवाली तक पहुंचने के लिए पक्की सड़क नहीं है। बिजली की आपूर्ति नहीं होती। ग्रामीणों को पीने का पानी भी नहीं मिल रहा। परेशान ग्रामीणों ने लोकसभा चुनाव में मतदान न करने की ठानी और मतदान केन्द्र तक नहीं पहुंचे। प्रशासन ने यहां समझाइश कर पांच वोट तो डलवा लिए, लेकिन बुरी तरह त्रस्त ग्रामीणों ने एक तरह से मतदान का बहिष्कार ही रखा। गांव के सरपंच बजरंग सिंह के शब्दों में आजादी के 78 साल बाद भी कच्चा रास्ता, शिक्षा, बिजली, पीने के पानी की व्यवस्था गांव तक नहीं पहुंचने से ग्रामीणों का नेताओं पर से भरोसा ही उठ गया।

खाजूवाला विधानसभा क्षेत्र के बराला का बूथ विधानसभा चुनाव के दौरान भी सर्वाधिक मतदान कर प्रथम स्थान पर रहा। सरपंच गिरधारीलाल के मुताबिक, शत-प्रतिशत शिक्षित ग्रामीणों वाले इस गांव के लोगों में सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता है। गांव में लगातार विकास के काम हुए हैं। यही वजह है कि अब लोकसभा चुनाव में सर्वाधिक मतदान किया।

फुलेरा जंक्शन पर पुलिया टूटने से रेल यात्री परेशान

फुलेरा, (निसं)। फुलेरा जंक्शन पर अव्यवस्थाओं की भरमार देखने को मिल रही है। इसके अंतर्गत प्लेटफार्म पर आवारा कुत्तों, पशुओं का जमावड़ा देखने को मिल रहा है। इसके अलावा वहीं रेलयात्री प्लेटफार्म पर खड़ी ट्रेनों के नीचे से जान जोखिम में डालकर रेलवे स्टेशन पहुंच रहे हैं। वहीं जंक्शन पर पूर्व में पुरानी पुलिया थी उसको भी प्रशासन द्वारा तोड़ दी गई। इसकी जगह नई पुलिया बनने का प्रावधान है लेकिन नई पुलिया बनने में अभी काफी समय लगेगा। क्योंकि अभी तो पुरानी पुलिया भी पूरी नहीं तोड़ी गई है। वो भी अधरझूल में है। नई पुलिया बनेगी जब तक रेल यात्रियों, बुजुर्गों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। प्रशासन द्वारा रेलवे स्टेशन के अन्तिम छोर में बनाया गया ओवरब्रिज भी काफी ऊंचा होने के कारण बुजुर्गों को यहां से आने-जाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। इसके चलते यहां एस्केलेटर या लिफ्ट लगे तो जरूर इनको राहत मिल सकती है लेकिन अभी वर्तमान में स्थिति काफी दयनीय है। जबकि फुलेरा से प्रतिदिन 15 हजार से अधिक दैनिक रेलयात्री अपनी रोजी रोटी कमाने के लिए जयपुर एवं अजमेर सहित अन्य स्थानों के लिए अप-डाउन करते हैं। कई बार तो ओवरब्रिज होकर जाते जाते इनकी ट्रेन भी छूट जाती है।

फुलेरा जंक्शन पर रेलयात्री जान जोखिम में डालकर रेलवे स्टेशन पहुंच रहे हैं।

राशिफल बुधवार 24 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, स्वाती नक्षत्र रात्रि 12:41 तक, सिद्धि योग गुरूवार प्रात: 5:05 तक, बालव करण सांय 6:02 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

कुमार योग आज रात्रि 12:41 से सूर्योदय तक है। आज अश्विनी मेष रात्रि 11:58 पर प्रवेश करेगा। आज एकलिंग पाटोत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:12 तक, शुभ 10:48 से 12:25 तक, चर 3:38 से 5:15 तक, लाभ 5:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:58, सूर्यास्त 6:52

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यक्तिगत कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

धनु
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से सम्पन्न होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।